International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 10-04-2019; Accepted: 15-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 17-19

महायोगी गुरूगोरखनाथ जी का हिन्दी साहित्य के विकास में अवदान

सीमा सिंह, प्रेम सुमन शर्मा
हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से भारतभूमि महान सन्त महात्माओं की तपस्थली बन कर आध्यात्म, योग, सभ्यता, संस्कृति और साहित्य से परिपूर्ण ज्ञानरूपी अक्षय भण्डार प्रवाहित होता आया है, वह विश्व को नेतृत्व प्रदान करने और मार्गदर्शन की अद्भुत क्षमता रखती है। प्राचीनकाल में ऋषि मुनियों की विचार अभिव्यक्ति की माध्यम संस्कृत भाषा थी, संस्कृत भाषा में जितने भी कृतियाँ उपलब्ध है। वह हमारे सहित्य जगत के लिए खजाना है। ऋषि परम्परा में संस्कृत के आदिकवि बाल्मिकी का साहित्य में जो स्थान है, वह स्थान हिन्दी साहित्य में महायोगी गोरखनाथ को मिलनी चाहिए थी, वो नहीं मिला।

'नाथ पंथ के प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ जी को हिन्दी और भोजपुरी का आदिकवि कहा जाय तो आधिक उपर्युक्त होगा।'[1]

किसी भी महान व्यक्तित्व और उसकी कृति को समझने के लिए तात्कालिक, राजनीतिक, धर्म, दर्शन, सामाजिक व्यवस्था तथा अन्य विषयों का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। कुछ विद्वानों गोरखनाथ पर दृष्टिपात किया तो लेकिन उन्हें महत्वपूर्ण स्थान नहीं मिला। इसी से इतिहास भी श्रृंख्लाबद्ध नहीं हो सका। ''लोकभाषा संस्कृति को नाथ पंथ के योगियों ने जितना समृद्ध व सशक्त बनाया शायद ही कोई पंथ या संप्रदाय अथवा भारत के अन्य धार्मिक आध्यात्मिक संगठन ने किया हो।''[2] 'नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरू गोरखनाथ के व्यक्तित्व के विषय में आचार्य हजारी प्रसाद के ये वाक्य उद्धृत है– गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े धर्म नेता थे। उनका चरित्र स्फटिक के समान उज्जवल बुद्धि भावेश से एकदम अनाविल और कुशाग्र तीव्र थी।''[3] शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित महापुरूष भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ भारतवर्ष के कोने कोने में अनुयायी आज भी है। भक्ति आन्दोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन गोरखनाथ का योगमार्ग ही था।''[4] गुरू गोरखनाथ हिन्दी खड़ी बोली के सबसे पहले कवि है। हिन्दी भाषा और उसके विकास में तथा सम्पूर्ण भारत को सन्त परम्परा के विकास में गोरखनाथ का स्थान सर्वप्रमुख है। लोककथाओं, दन्तकथाओं और प्रवादों के अतिरिक्त काव्य और गद्य में रचित नाथ सम्प्रदाय विशेषतः गुरू गोरखनाथ की दार्शनिक मान्यताएँ विशिष्ट स्थान रखती है।

गोरखनाथ अपने काल के परम शक्तिशाली महात्मा थे। उनकी रचनाओं का जो रूप उपलब्ध है, वे भिन्न–भिन्न प्रकार के है, गोरखनाथ जी महाराज संस्कृत व हिन्दी दानों भाषाओं में रचनाए लिखकर साहित्य जगत को अमूल्य निधि प्रदान किया है जो कवि सन्त महात्माओं का मार्गदर्शन करती है।

'' आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने– नाथ–सिद्धों की हिन्दी रचनाओं को सिद्धसिद्धान्त पद्धति, विवेकमार्तण्ड, शक्तिसंगम तन्त्र, निरंजन पुराण, वैकुण्ड पुराण आदि संस्कृत रचनाओं का अधिकतर अनुवाद या सार माना था।''[5] इससे कुछ भिन्न मत डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी व्यक्त करते हुये कहा है कि– संस्कृत में योगियों के जो ग्रन्थ उपलब्ध है वे साधारण तौर पर साधनमार्ग के ही व्याख्यात्मक ग्रन्थ है। उन योगियों के दार्शनिक और नैतिक उपदेशों को आभास बहुत कम मिलता है। हिन्दी में गोरखनाथ के नाम से जो अनेक पद और सबदी आदि प्रचलित है, उनमें भी साधनमार्ग की व्याख्या की गयी है, पर उनमें योगियों के धार्मिक विश्वास, दार्शनिक मत और नैतिक स्वर का परिचय अधिक स्पष्ट भाषा में मिलता है इस दृष्टि से इस हिन्दी रचनाओं का विशेष महत्व है।''[6] इस प्रकार हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने शुक्ल जी के मत से भिन्न हिन्दी रचनाओं की महत्ता और विशेषता स्वीकार किया है।

'अन्य नाथ सिद्धों की तुलना में गोरखनाथ हिन्दी में विशेष रूप से कई कारणों से प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण रहे है। उनकी रचनाओं का मूल्यांकन भाषा, काव्यरूप, छन्द, रचनाशैली, योग एवं साधनात्मक पद्धति, शब्दावली, सामाजिक दृष्टिकोण आदि दृष्टियों से किया जाता रहा। नाथों में सर्वाधिक महिमाशाली होने के कारण ही उनकी रचनाए सर्वाधिक विचारणीय रही। सर्वप्रथम मिश्रबन्धुओं ने गोरखनाथ की रचनाएँ उद्धृत की।''[7]

'सो वह पुरूष तीर्थ स्थान करि चुकौ, अरू सम्पूर्ण पृथ्वी ब्रहमनानि को दे चुकौ
अरू सहस्त्र जज्ञ करि चुकौ, अरू देवतास सबे पुजि चुकौ
अरू पितरनि को सन्तुष्टि करि चुकौ, स्वर्गलोक प्राप्त करि चुकौ
जा मनुष्य के मन छनमात्र बहमा के विचार बैठो।

''श्री गुरू परमानन्द तिनको दण्डवत है। है कैसे परमानंद आनंद स्वरूप है शरीर जिन्हि को। जिन्हि के नित्य गायै ते शरीर चेतन्ति अरू आनन्दमय होतु है। मैं जु हौं गोरिष सो महन्दर नाथ को दण्डवत करत है। है कैसे वै मछन्दरनाथ आत्मा ज्योति निश्चल है अंतहकरन जानै, अरू जुग काल कल्प इनकी रचना तत्व जिनि गायो। सुगंध को समुद्र तिनि को मेरी दण्डवत स्वामी तुमे तो सत् गुरू अम्है तौ सिष सबद एक पुदिवा दया करि कहिबा मनि न करिबा रोए।''[8]

'इन उदहरणों के आधार पर मिश्रबन्धुओं ने गोरखनाथ को हिन्दी का सर्वप्रथम गद्य लेखक माना।''[9]

'उपर्युक्त उद्धरणों की भाषा के रूप तथा गोरखनाथ के समय का विचार करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि मिश्रबन्धुओं का मत प्रामाणिक नहीं है। उन्होंने यह भी संकेत नहीं किया कि गोरखनाथ के किस ग्रन्थ अथवा हस्तलेखन से ये गंद्याश उद्धृत है आगे के इतिहासकारों ने भी मिश्रबन्धुओं का आधुनिकरण किया। दूसरे गंद्याश का अन्तिम अंश डा० बडथ्थवाल द्वारा संपादित गोरखबानी में उपलब्ध है।''[10]

गोरखनाथ के हिन्दी रचनाओं के एकत्रीकरण और संपादन का सर्वप्रथम व्यवस्थित प्रयत्न डा० पीताम्बर दत्त बड़थ्थ्वाल ने किया। उन्होंने नागरिप्रचारिणी सभा के साहित्य परिषद में कोषोत्सव के अवसर पर 1930 में व्याखान देते समय सबसे पहले नाथयोगियों और उनकी कविता का परिचय दिया था जो बाद में लेख के रूप में छपा था।''[11]

'और वही बाद उनके निबन्ध संग्रह 'योगप्रवाह' में संकलित कर प्रकाशित किया गया। इस लेख में प्रकाशित एवं स्थापित यद्यपि

उनके बात बातें अब असिद्ध व अप्रामाणिक हो गई है तथापि पं० तारादत्त जी गौरेला की कृपा से प्राप्त गोरखनाथ की सत्रह पोथियों का प्रथम परिचय मिलता है। वे रचनाएँ है– सबदी, पद, तिथिवार, अभैमात्रा योग, संख्या दर्शन, प्राणसंकलित, आत्मबोध, नरबैबोध, काफिरबोध, अवलिसिलक, जाती भैरावली, रोमावली, साखी, महीन्द्रगोरखनाथ, गोरख–गणेश संवाद, गोरखनाथ संवाद। उनमें कुछ को तो उन्होंने स्पष्ट ही गोरक्षकृत नहीं माना। पौराणिक व्यक्तियों के संवादों को उन्होंने शिष्यों की रचना माना।''[12]

इस लेख का व्याख्यान के रूप् में प्रस्तुतीकरण दिसम्बर 1930 में किया गया था तदुपरान्त डॉ० बड़थ्थवाल ने सामाग्री को व्यवस्थित कर उसे 'गोरखबानी संग्रह नाम से 1942 में प्रकाशित कराया। यहाँ मेरा प्रयोजन केवल गोरखनाथ की रचनाओं से है। उन्होंने इस संग्रह की भूमिका में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि ये 'बानियाँ' हमारे साहित्यिक और सांस्कृतिक विकास की लड़ी में महत्वपूर्ण कड़ी है।''[13]

इस बथ्थवाल में इस संग्रह की रचनाओं की तीन भागों में संपादित किया है, प्रथम मुख्य भाग में उन्होंने सबदी, पद, शिष्यादर्शन, प्राणसंकलित, नरवैबोध, आत्मबोध, अभैमात्राजोग, पन्द्रहतिथि, सप्तसार महीन्द्रगोरखनाथ बोध, रोमावली, ग्यानतिलक, पंचमात्रा, नाम की रचनाएं संपादित की है, और सबदी तथा पदों की टीका देने के साथ अन्य रचनाओं पर अर्थ सम्बन्धी टिप्पणिया दी है। उन्होंने कुल आठ हस्तलेखों का संग्रह किया था। जिसमें से च प्रति 'पुरोहित नारायण शर्मा, जयपुरी की प्रति' सबसे पुराना संवत् 1715 प्रति मानी। इस प्रथम भीग के सारी रचनाओं की पुष्टि प्रायः सभी आठ हस्तलेखों से हो जाती है। पीताम्बर दत्त बडथ्थवाल ने आठ हस्तलेखों से 40 रचनाओं की सूची बनाई जिसमें 19 तक की रचनाओं का उन्होंने तर्क दिया। शेष के बारे में कुछ नहीं कहा, हिन्दी रचनाओं के लिए सर्वाधिक उपयोगी संग्रह पीताम्बरदत्त बडथ्थवाल का ही है।

गोरखबानी की रचनाओं में सर्वप्रथम 'सबदी' संपादि है और प्रामाणिकता में भी प्रथम स्थान है। यद्यपि इसमें कुल 275 सबदिया संपादित है, किन्तु डॉ० बडथ्थवाल ने केवल 189 सबदियों को प्रामाणित माना क्योंकि ये सबदिया सभी प्रतियों में समान रूप् से मिलती है, सभी प्रतियों में सबदियों की संख्या समान नहीं है। इनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गई। 189 सबदियों अथवा सबदियों में भी स्वयं बड़थ्थवाल दो–एक को स्पष्ट ही दूसरों को मानते है।''[14]

प्रामाणिकता की दृष्टि से भाषा पर विचारी कर यह कहा जा सकता है कि सबदियों में हमें भाषा का जो रूप उपलब्ध है, वह दसवी सदी का नहीं है। स्वयं बड़थ्थवाल ने यंत्र–तंत्र इस प्रकार की बात कहकर यह स्पष्ट किया है कि ये रचनाए परम्परा से आई है। इससे उन्होंने दो तथ्यों को प्रकट किया। एक तो यह नाथवाणी के प्रति शिष्यों और श्रद्धालुओं की श्रद्धा–भावना ने इन्हें नष्ट होने से बचाया। दूसरा यह कि स्मृति के कारण उसमें परिवर्तन या छूट हो जाती है और सामप्रदायिक आग्रह से नई रचनाए जुड़ जाती है अथवा पुरानी रचनाओं में परिवर्तन हो जाता है।''[15]

गोरखबानी की सर्वप्रथम रचना 'सबदी' है, इसमें गोरखनाथ ने दर्शन, साधन और आध्यात्म से सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त किए है ये मुक्तक है, इसमें गोरखनाथ ने कठोर ब्रहमचर्य, शारीरिक शौच, मानसिकता शुद्धता, वाक्संयम, ज्ञान के प्रति निष्ठा, बाहय आचरणों के प्रति अनादर, आन्तरिक शुद्धि और मद्य, मांस, भोग के प्रति पूर्ण बहिष्कार पर जोर दिया है। इन स्वरों ने परिवर्ती साधको को बहुत कुछ बनी–बनाई पृष्ठभूमि मिली।''[16]

'पद' इसमें 62 पद है इनमें गोरखनाथ ने संवोधनात्मक पद्धति अपनाई है। इस पदों में भी बिंदु रक्षा, हठयोग, सहज, प्राणयाम, नादानुसंधान, अजपाजय, अहिंसा, संयम–आचार, आत्मसाधन, आडम्बर विरोध, मांसनिषेध, मानस साधन, विपरीतकरण, मानस साधन, विपरीतकरण, मानसिक पूजा जैसे विषयों को अपेक्षाकृत अधिक अनुभूत्यात्मक ढंग से व्यक्त करने का प्रयास किया है।

'शिष्यादरसन' इसमें सृष्टि की सभी वस्तुओं में से सर्वश्रेष्ठ का चयन कर उनकी विशेषता नाथानुसार बताई गई है, यह गोरक्ष का अपने शिष्यों के लिए किया गया उपदेश है।

'प्राणसंकलि' अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण रचना है। नाथ और संत साहित्य में इस पद्धति और विषय वस्तु की रचनाओं को व्यापक प्रयोग देखने में आता है रचना के प्रारम्भ में गुरू वन्दना की गई है– प्रथमें प्रण गुरू के पाया

जिन मोहि आत्म ब्रहय लखाया।

'आत्मबोध' जो ब्रहमाण्ड में है वही पिंड में है, यही एक प्रकार का आत्मबोध है क्योंकि इसे बिना जाने कोई योगी नहीं हो सकता इसका प्राण की श्रृंख्ला से सीधा सम्बन्ध है। प्राण से चंचल शरीर के बाधना, उसे स्थिरता दृढ़ता और परिपक्वता प्रदान करना नाथयोग का प्राथमिक लक्ष्य है।

'नरवैबोध' योग की चार अवस्थाओं– आरम्भ,घट, परिचय और निष्पत्ति'' का परिचय देकर योगानुकूल संयम एवं आचार उपदेश किया गया है। इसमें कुल 14 छनद है।

'अभैमात्रा जोग' इसमें यम–नियम का रूपतामक वर्णन है जैसे– पवन, गुटिका, संयम कोपीन, धीरज देउ, अतीत देवता, जुग पलव, अमी फल।

'पन्द्रह तिथि' इस रचना में तिथ्यानुसार योगसाधन वर्णित है और साथ में आडम्बरपूर्ण साधन का खण्डन है।

'सप्तवार' इसमें वारानुसार विभिन्न साधनों का निर्देश है।

'मछीन्द्रगोरखबोध' यह बहुत प्रसिद्ध रचना है, जिसमें गोरक्ष के अनेक प्रश्नों का समाधान मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा प्रस्तुत किये गये है। विषय सबदी के ही है। इसमें कुल 127 छन्द है।

'रोमावली' शरीर रचना के तत्वों का विचार कर मुद्रा, बंध, वेध, पीर, पवन, इन्द्रिय आदि का विविध रूपतामक एवं योगपरक वर्ण है।

प्र०– हिन्दी पीर जिंद पीर ए बोलिए घट भितरि ते कोणं कोणं

उ०– हिन्द पीर बोलिए मन, जिन्द पीर बोलिए पवन 'ग्यानतिलक' इसमें पुरूषकार के साथ अन्य योगात्मक तत्वों का सबदी के समान ही वर्णन है, वर्णन अपेक्षाकृत अधिक काव्यात्मक है और रचना भी अधिक साफ है।

'पंचमात्रा' पंचतत्वों का आध्यात्मयोगात्मक विचार है। इसमें चित चक्र और मूलचक्र का उल्लेख तो अवश्य है किन्तु न तो इसका विस्तार है और न अन्य चक्रों का।

ये मूल रचनाओं का संक्षिप्त विषय सामग्री का परिचय प्रस्तुत किया गया है।''[17]

गोरखनाथ की महत्वपूर्ण देन उलटवासियां है गोरखनाथ जी के उलटवासियां का ये पद– नाथ बोले अमृतवाणी बरिषैमी

कंबल भिजैगा पाणी।
गड़ि न पइसा बाधि लै खूटा, चले दमांमां बाजिलै ऊँटा।

उलटवासियां को 'उलटा देद, उल्टा पथ, या उलटी चर्चा भी कहा गया है। उपमानों का विरोधात्मक योजना को केन्द्रमानकर उलटवासियों की चमत्कारपूर्ण शैली यद्यपि सिद्ध काव्य से प्रारम्भ हो गयी थी। किन्तु गोरखनाथ की रचनाओं में सर्वाधिक उलबाँसी मिलती है। लोकोक्तियां गोरखनाथ ने लोकभाषा में सूक्तियां रचकर भाषा सम्प्रेषण को सुगम बना दिया है, संत परम्परा के लिए प्रस्तुत लोकोक्ति–

अगिला अगनि होइबा अवधु, तो आपण होइबा पाणी।
अर्थात दूसरा आग हो तो स्वयं को पानी हो जाना चाहिए।
अवधु मन चंगा तो कठौती में गंगा।[18]

इन लोकोक्तियों से गोरखनाथ के काव्य में रमणीयता और सजीवता आई है गोरखनाथ की काव्य दुरूह होकर भी लोककथाओं और प्रवादों का जुड़ जाना उनके प्रखर और प्रभावी व्यक्तित्व का परिचायक है।
गोरखनाथ अपनी रचनाओं तथा साधना में योग के अंग क्रिया–योग तप, स्वध्याय, ईश्वर प्राणिधान, को अधिक महत्व दिया है, इनके माध्यम से इन्होंने हठयोग का उपदेश दिया गोरखनाथ शरीर मन के साथ नये–नये प्रयोग करते थे। हिन्दी के आदिकालीन समाज में स्वेच्छाचार, अमर्यादित जीवन, अतिवादिता, सिद्धान्तों और तथाकथित उच्चसाधनाओं की आड़ में भोग की योग घोषित करने की प्रवृत्ति, अनधिकारियों के प्रवेश–भोग विलास की अति आडम्बर, अनावश्यक संग्रह आदि विभिन्न प्रवृत्त्यिों का प्राबल्य था। योग के प्रति धारणा गिरती जा रही थी। आडम्बर और अन्धविश्वास बढ़ता जा रहा था। अतः वज्र साधकों और सहजयानियों की अपार भीड़ के बीब में से संयत और अनुशासित जीवन का मार्ग गोरखनाथ जी ने दृढ़ निकाला जिससे शुद्ध शरीर, शुद्धाचार, सालिक और कर्मठ एवं अनुशासित जीवन का यर्थाथ रूप सामने आया ऐसे महान व्यक्तित्व की कृति। सन्त महात्माओं और कवियों के लिए पथ प्रदर्शक और मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहा है। यदि आज के समय में किसी भी कवि अथवा सन्त कवि प्रासंगिता है तो वह है महायोगी गुरूगोरखनाथ जी महाराज उनकी रचनाए एवं लोकोक्तियां आज भी लोकजीवन में सुनने को मिलती है यह गोरखनाथ के प्रभावी कुटिल का ही प्रमाण है।

सन्दर्भ

1. लोकभाषा संवर्धन में नाथपंथ का योगदान
2. लोकभाषा संवर्धन में नाथपंथ का योगदान
3. नाथ संप्रदाय, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, ग्रन्थावली–6 पृष्ठ 210–11
4. नाथ संप्रदाय, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी , पृष्ठ–95
5. हिन्दी सा० का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 19
6. नाथ सम्प्रदाय, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृ. 182
7. मिश्रबन्धु विनोद, मिश्रबन्धु, पृ. 211–212
8. मिश्रबन्धु विनोद, मिश्रबन्धु पृ. 211–212
9. मिश्रबन्धु विनोद, मिश्रबन्धु, पृ. 211
10. गोरखवानी, मछीन्द्रगोरखबोध, पीताम्बर बड़थ्थवाल पृ.186
11. नागरी–प्रचारिणी प्रत्रिका, पीताम्बर दत्त बडथ्थवाल, भाग–11 सं,–4 माघ 1987 वि०
12. योग प्रवाह, पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल पृ, 14–15
13. गोरखबानी भूमिका, पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल पृ. 11
14. गोरखबानी भूमिका, पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल पृ. 18
15. गोरखबानी भूमिका, पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल पृ. 15–16
16. महायोगी गोरखनाथ, साहित्य और दर्शन, गोविन्द रजनीश, पृ. 44
17. गोरखबानी का पद भाग, पीताम्बर दत्त बड़थ्थवाल, पृ. 85–158
18. महायोगी गोरखनाथ, गोविन्द रजनीश, पृ. 51–54